PAGE NO :
DATE : / /

सूरदास का वात्सल्य वर्णन :-

सूरदास का वात्सल्य वर्णन हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है। श्री कृष्ण के बाल सौंदर्य की झाँकी के साथ-साथ बाल मनोविज्ञान का जैसा चित्रण सूरकाव्य में उपलब्ध होता है, वैसा अन्यत्र विरला मिलता। बालक की चेष्टाओं, माता के हृदय की आशंकाओं, पुत्र के प्रति वात्सल्य भाव, बाल-वृत्तियों का निरूपण, मातृ हृदय की झाँकी आदि का मर्मस्पर्शी और मनोहारी चित्रण सूरदास ने किया है। उनकी इस विशेषता को लक्ष्य कर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है — "बाल सौन्दर्य और स्वभाव के चित्रण में जितनी सफलता सूर को मिली है, उतनी अन्य किसी को नहीं। वे अपनी बंद आँखों से वात्सल्य का कोना-कोना झाँक आए हैं।"

सूर के वात्सल्य वर्णन में स्वाभाविकता, विविधता, रमणीयता और मार्मिकता है जिसके कारण ये वर्णन अत्यंत हृदयग्राही और मर्मस्पर्शी बन पड़े हैं। यशोदा के लाड़ले सूरदास ने मातृ हृदय का ऐसा स्वाभाविक, सरल और हृदयग्राही चित्र खींचा है कि आश्चर्य होता है। वात्सल्य के दोनों पक्षों - संयोग और वियोग का चित्रण सूरकाव्य में उपलब्ध होता है। वात्सल्य के संयोग पक्ष में उन्होंने एक ओर तो बालक कृष्ण की रूप माधुरी का चित्रण किया है तो दूसरी ओर बालोचित चेष्टाओं का मनोहारी वर्णन किया है यथा :

हरिजू की लाल छवि कहौ बरनि।
सकल सुख की सीव कोटि मनोज सोभा हरनि।

कृष्ण कहीं घुटनो के बल चल रहे है तो कहीं मुख पर दधि का लेप किए दौड़ रहे हैं। कहीं अपने प्रतिबिम्ब को पकड़ने की चेष्टा कर रहे है, तो कहीं किलकारी भर रहे हैं। एक चित्र देखिए :

सोभित कर नवनीत लिए।
घुटरुन चलत रेनु तन मण्डित मुख दधि लेप किए।

सूर ने बाल कृष्ण की लीलाओं का चित्तार्षक एवं मनोहारी चित्र अंकित करने मे जैसी सफलता प्राप्त की है वैसी किसी को नही मिल सकी है।

किलकत कान्ह घुटरुवनि आवत।
मनिमय कनक नन्द के आँगन बिम्ब पकरिबे धावत।।

सूरदास ने बालकों के हृदयस्थ मनोभावो का चित्रण भी बड़े मनोयोग से किया है। बालको की क्रीड़ा, पारस्परिक, प्रतिस्पर्द्धा, बुद्धि चातुर्य, अपराध को छिपाने की प्रवृत्ति भोले-भाले तर्क आदि का विशद चित्रण सूर काव्य मे मिलता है। माता यशोदा उन्हे दूध पीने के लिए मनाती हुई यह लालच देती है कि दूध पीने पर तुम्हारी चोटी बढ़ जाएगी। कृष्ण उनकी बात मानकर एक हाथ से चोटी पकड़कर

माता यशो और दूसरे हाथ से दूध का गिलास पकड़कर माता यशोदा से पूछने लगते है।

मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी ?
किती बार मोहि दूध पियत भई यह अजहूँ है छोटी॥

तो माखन चोरी करते हुए रंगे हाथों पकड़े गए है मुख पर माखन लगा हुआ है फिर भी तर्क देकर माता के सामने अपनी निर्दोषता प्रमाणित करते हुए कहते है :

मैया मैं नहिं माखन खायो।
ग्वाल परे ये सखा सबै मिलि मेरे मुख लपटायो॥

सूरदास ने बाल आक्रोश का भी चित्रण सुन्दर ढंग से किया है। बलदाऊ कृष्ण को चिढ़ाते है कि तू यशोदा का पुत्र नहीं है, तुझे तो मोल लिया गया है। कृष्ण खीझ जाते हैं और अपने आक्रोश को अभिव्यक्ति इन शब्दों मे माता यशोदा से करते है :

मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायो।
मोसौं कहत मोल को लीन्हो तू जसुमति कब जायो।

माता यशोदा को अपने पुत्र का बड़ा ध्यान रहता है। बच्चों की जिद बेतुकी होती है कृष्ण ने

हठ पकड़ ली है कि मैं तो चन्द्र खिलौना लूँगा। अब मैया यशोदा क्या करे? वह जैसे-तैसे उन्हें बहलाती है पर बात नहीं बन पाती। सूरदास ने इसका वर्णन निम्न पंक्तियों में किया है:

मैया मैं तो चन्द खिलौना लेहौं।
जैहौं लोटि अबै धरनी पै तेरी गोद न ऐहौं।

माता उन्हें समझाती है पानी में चन्द्र का प्रतिबिम्ब दिखाती है, पर वे नहीं मानते तब माता यशोदा कहती है कि मैं तेरे लिये चाँद सी बहू लाऊँगी तो कृष्ण कहते हैं — ठीक है मैं अभी विवाह करने जाऊँगा, तो दूसरी समस्या आ खड़ी हुई। ये सभी वर्णन कितने स्वाभाविक हैं कि पाठक का हृदय इन्हें पढ़ते ही रसमग्न हो जाता है।

सूरदास ने जितनी तन्मयता से वात्सल्य के संयोग पक्ष का चित्रण किया है, उतनी ही तन्मयता से वात्सल्य के वियोग पक्ष का चित्रण भी किया है। श्री कृष्ण के मथुरा के लिए प्रस्थान करते समय यशोदा कितनी विकल है इसका चित्र इन पंक्तियों में देखा जा सकता है:

जसोदा बार-बार यों भाखै।
है कोई ब्रज में हितू हमारो चलत गोपालहिं राखै।

कृष्ण के मथुरा चले जाने पर माता का वात्सल्य पूर्ण

हृदय अपने पुत्र के लिए विकल होने लगता है। कि कृष्ण की आदतों से वे जितनी परिचित थीं उतना और कोई उसे नहीं जानता। अतः देवकी को सन्देश भेजती हुई कहती है:

संदेसो देवकी सों कहियो।
हौं तो धाय तिहारे सुत की कृपा करति ही रहियो।
जदपि टेव तुम जानति है हो तऊ मोहि कहि आवै।
प्रात होत मेरे लाल लडैते माखन रोटी भावै॥

उक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि सूरदास का वात्सल्य वर्णन अत्यन्त हृदयस्पर्शी, मार्मिक एवं स्वाभाविक है। वात्सल्य का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जिसका वर्णन सूरदास ने न किया हो। उनके वात्सल्य वर्णन में तन्मयता, स्वाभाविकता, मनोवैज्ञानिकता एवं सहजता है। उन्होंने केवल बाल लीला का ही चित्रण नहीं किया अपितु बालकों की मानसिक प्रवृत्ति का भी हृदयग्राही वर्णन मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में किया है अतः यह कहना तर्कसंगत होगा कि सूर के वात्सल्य वर्णन में मनोवैज्ञानिकता का पुट है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सूरदास के वात्सल्य वर्णन की प्रशंसा करते हुए लिखा है: "आगे होनेवाले कवियों की श्रृंगार और वात्सल्य की उक्तियाँ सूर की जूठी सी जान पड़ती हैं।"

निश्चय ही सूरदास वात्सल्य के सम्राट हैं और उनका वात्सल्य वर्णन हिन्दी साहित्य की

किसी अपूर्व निधि है जिस पर हम बात कर सकते हैं।